

डॉ. मार्व विल्सन, भविष्यवक्ता, सत्र 7, व्याख्यात्मक सिद्धांत, भाग 3, योना का परिचय

© 2024 मार्व विल्सन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. मार्व विल्सन द्वारा भविष्यवक्ताओं पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 7, हेर्मेनेयुटिकल सिद्धांत, भाग 3, और योना का परिचय है।

मैं शुक्रवार को होने वाली परीक्षा के बारे में कुछ बातें कहना चाहता हूँ।

मैं आपको इसके लिए पूरा एक घंटा दूंगा। इसमें लगभग 100 प्रश्न होंगे, इसलिए इसमें उन पुस्तकों को बहुत अच्छी तरह से कवर किया जाएगा। यह एक वस्तुनिष्ठ प्रकार की परीक्षा होगी।

कभी-कभी मैं एक आयत देता हूँ और आपसे पूछता हूँ कि यह उन छह पैगम्बरों में से किस पैगम्बर की है, इसलिए आपको हर पैगम्बर के महत्व से परिचित होना चाहिए। यह एक आयत हो सकती है जिसका महत्व अलग हो। मैं एक आयत दे सकता हूँ और एक शब्द छोड़ सकता हूँ।

यह उन शब्दों में से एक है जो आपको सबसे पहले याद आता है। आपको उस शब्द को भरना होगा। इसलिए, आपको इसका बहुत बारीकी से अध्ययन करना होगा।

होशे, योएल, आमोस, योना, मीका, हबक्कूक। ये छह भविष्यवक्ता हैं। इनमें से कुछ बहुविकल्पीय होंगे, कुछ सच्चे और कुछ झूठे होंगे, कुछ अतिरिक्त होंगे, लेकिन इसमें वह सारी जानकारी शामिल होगी।

या तो एनआईवी या नया आरएसवी संभवतः उपयोग करने के लिए दो सबसे अच्छे संस्करण हैं। एक अलग अनुवाद का उपयोग करना पूरी तरह से विदेशी भाषा नहीं होगी, लेकिन जैसा कि मैं परीक्षाओं की तैयारी करते समय पाठ्यक्रम में संकेत देता हूँ, मैं संवेदनशील होने की कोशिश करता हूँ, खासकर उन दो संस्करणों के प्रति, ताकि कोई भ्रम न हो। कोई व्याख्या नहीं होगी।

मेरा मतलब है कि बाइबल क्या कहती है और आप बिना किसी नोट्स, किसी टिप्पणी, किसी मदद के, सिर्फ पाठ को पढ़कर क्या समझ सकते हैं। अब, पागलपन की विधि आंशिक रूप से यह है कि आज बहुत से लोग बाइबल को केवल द्वितीयक स्रोतों या द्वितीयक साहित्य या सारांशों के आधार पर ही जानते हैं। वे स्वयं शास्त्रों को नहीं पढ़ते हैं और यह अभ्यास स्वयं शास्त्रों से परिचित होने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

गॉर्डन में स्नातक स्तर पर जोर देने का यही केंद्रबिंदु है, शास्त्रों को जानना, व्याख्या करना, शास्त्र की विषय-वस्तु को समझना। आप में से जो कोई भी सेमिनरी के बारे में सोच रहा है, सेमिनरी शिक्षा के बारे में एक बड़ी मिथक जिसके बारे में स्नातकों को जानकारी नहीं है, वह यह है कि

सेमिनरी में ज़्यादातर मामलों में बाइबल नहीं पढ़ाई जाती। वे मानते हैं कि जब आप वहाँ पहुँचते हैं तो आपको बाइबल पता होती है।

सेमिनरी में आप जो भी कोर्स करते हैं, उनमें से ज़्यादातर बाइबल को दूसरे विषयों से जोड़ते हैं, लेकिन यह माना जाता है कि आप इसे जानते हैं, इसलिए आप इसके बारे में धार्मिक रूप से सोच सकते हैं, या आप उपदेश या परामर्श या चर्च के इतिहास या चर्च प्रशासन के कोर्स कर सकते हैं, लेकिन ऐसे कोर्स जो वास्तव में बाइबल में कही गई बातों से निपटते हैं, बाइबल के पाठ को समझना, खिलाड़ियों को जानना, घटनाओं को जानना, कौन कौन है, ज़मीन की स्थिति को जानना। पिरामिड बनाने में यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण पहला कदम है। जब तक आपके पास संदर्भ का ढांचा न हो, आप बाइबल अध्ययन चर्चा में प्रवेश नहीं कर सकते।

गॉर्डन में हम जो करने की कोशिश कर रहे हैं, वह छात्रों को वह आधार, वह संदर्भ-ढांचा देना है जो बाद में धर्मशास्त्रीय चिंतन के लिए आवश्यक होगा और अन्य विषयों के लिए इसके निहितार्थों को स्पष्ट करेगा। जब तक आप बाइबल को नहीं जानते, तब तक आप बाइबल को अन्य विषयों से नहीं जोड़ सकते। इसलिए, यदि आप विज्ञान और धर्मग्रंथों के प्रश्नों में रुचि रखते हैं, तो यह जानना अच्छा है कि बाइबल सृष्टि के बारे में क्या जानती है और इन मुद्दों के बारे में यह क्या कहती है, इससे पहले कि आप उस चर्चा में गहराई से उतरें।

ठीक है, तो इस पर ज़ोर दिया जाएगा, ध्यान बाइबल के पाठ पर ही होगा। क्या आपके पास इस पर कोई सवाल है? मैं बस इसे प्रोत्साहन के तौर पर देना चाहता था। हाँ? क्या हमें अपनी बाइबल इस्तेमाल करने की अनुमति होगी? नहीं।

नहीं, मैं आपके लिए प्रार्थना करूँगा और अपनी बाइबल मत लाना। यह एक सौदा है। आप इस अभ्यास से आश्चर्यचकित होंगे, कि यह आपके जीवन के बाकी हिस्सों में आपकी कैसे मदद कर सकता है।

मैं 22 साल की उम्र में फ्रॉस्ट हॉल में बैठा था, अभी-अभी सेमिनरी शुरू की थी, और मेरे पास एक शिक्षक था जो गॉस्पेल में एक कोर्स कराता था। और सचमुच, इस एक सेमेस्टर के कोर्स में, तीन सिनॉप्टिक्स, मैथ्यू, मार्क और ल्यूक के हर अध्याय में क्या था, यह जानना था। और अगर, परीक्षा में, कोई व्यक्ति किसी विषय को पुकारता है, तो आपको अध्याय का नंबर बताने में सक्षम होना चाहिए।

वह सारा प्रवचन, मत्ती 24, लूका 21, मरकुस 13, इत्यादि। चारों सुसमाचारों में कौन-सा एक या दो चमत्कार पाए जाते हैं? आपको यह जानना था कि वह क्या था और वह कहाँ स्थित था। और जबकि मुझे उसका हर हिस्सा याद नहीं है, जाहिर है, आपको भी नहीं होगा।

जब मैं उस अनुभव को याद करता हूँ, सिर्फ सुसमाचारों में ही नहीं, बल्कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में भी, जहाँ हमें वही करना पड़ा, तो यह निश्चित रूप से आपको बाइबल के साथ बैठने और अंग्रेजी बाइबल के पाठ को समझने में मदद करता है। हम बाइबल के बारे में बात करते हैं कि यह हमें समझती है। खैर, हमें उन शब्दों को समझने से पहले उन पर महारत हासिल करनी

होगी। और इसलिए, यह एक अच्छा पहला कदम है, यह जानना कि चीज़ें कहाँ पाई जाती हैं और संबंधित जोर कहाँ हैं।

आपके पास इसकी व्याख्या पर काम करने के लिए पूरा जीवन है। लेकिन जैसा कि हमने कहा है, बाइबल में सबसे अच्छी व्याख्या बाइबल है, और इसीलिए जब आप कोई वाक्यांश सुनते हैं, तो बाइबल में हर जगह रोशनी चमकनी चाहिए अगर यह एक अनूठा वाक्यांश है। या प्रभु का दूत यहाँ दिखाई देता है, आह, प्रभु का दूत, मलाक यहोवा, प्रभु का दूत पवित्रशास्त्र में कहीं और कहाँ दिखाई देता है? नाम से स्वर्गदूत, उन्हें विशिष्ट नाम कहाँ से मिलने लगते हैं? जीवन की पुस्तक, क्या यह केवल प्रकाशितवाक्य में पाई जाने वाली एक पुस्तक अभिव्यक्ति है, या इसका कोई पुराना पूर्ववर्ती है? और उन्होंने उन पर हाथ रखे। क्या यह केवल नए नियम में पाया जाता है? या क्योंकि आपने पुराने नियम का अध्ययन किया है, आह, हाथ रखना केवल नए नियम में सेवकाई के लिए समन्वय के लिए या पवित्र आत्मा प्राप्त करने के लिए नहीं है जैसा कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में था।

लेकिन हाथ रखने का उल्लेख पवित्रशास्त्र में अन्यत्र मिलता है, और आप अपने दिमाग में उन संबंधों को विषयगत रूप से बनाना शुरू करते हैं, और कैसे एक दूसरे को समझने में वास्तव में बहुत उपयोगी हो सकता है। इसलिए, ये बिंदु संचयी हैं, और वे निर्माण करते हैं, और यह वचन के ज्ञान को संचित करने और उचित अवसरों के लिए उस ज्ञान का उपयोग करने में शामिल जीवन भर की जीवन रेखा है। मैंने अपने ससुर के साथ काम देखा, और उन्होंने संकेत दिया कि, अपने 94वें वर्ष में, यदि गॉर्डन कॉलेज का कोई छात्र किसी समस्या के साथ आता है, जिस पर वे चाहते हैं कि वह पवित्रशास्त्र से चर्चा करे, तो उसे किसी कॉन्कॉर्डेंस या किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है।

उन्होंने परमेश्वर के वचन का अध्ययन किया था और 20-21 वर्ष की आयु में ही पवित्रशास्त्र में महारत हासिल करने का लक्ष्य निर्धारित कर लिया था। और जो भी विषय सामने आता था, उसके लिए उन्हें पवित्रशास्त्र के उपयुक्त अंश पता होते थे, जिनका वे जीवन भर पवित्रशास्त्र का अध्ययन करके लाभ उठा सकते थे। यह एक आदर्श है जिस पर हम सभी को काम करना चाहिए, और यह एक प्रक्रिया है।

लेकिन यह काम कर सकता है, और यह वास्तव में बहुत, बहुत मूल्यवान हो सकता है यदि आप बाइबिल के उपदेश, बाइबिल परामर्श और बाइबिल के जीवन में विश्वास करते हैं। मुझे लगता है कि हम सभी ऐसा ही करते हैं। ठीक है, आज मैं भविष्यवाणी साहित्य और उनमें से कुछ सिद्धांतों की व्याख्या करना समाप्त करना चाहता हूँ, और फिर मैं योना की पुस्तक पर कुछ बातें बताना चाहता हूँ।

ठीक है, पिछली बार हमने बाइबल को नियतात्मक रूप से न पढ़ने के बारे में बात की थी। परमेश्वर का वचन कहता है कि आधुनिक जॉर्डन राज्य में इस भूमि पर इस्राएल का अधिकार है। इसलिए, यह उस क्षेत्र को साफ करने के लिए एक गहन सैन्य अभियान को उचित ठहराता है क्योंकि बाइबल कहती है कि यह भूमि इस्राएल की है। इतनी जल्दी मत करो।

यहाँ सिद्धांत यह है कि परलोक विद्या न्याय को रद्द नहीं करती। यही वह सिद्धांत है जिसे मैं समझाना चाहता हूँ। परलोक विद्या न्याय को रद्द नहीं करती।

हमें हमेशा संवेदनशील रहना चाहिए, यहाँ तक कि ईश्वर की इच्छा को पूरा करने में भी, संभावित नुकसान के प्रति, किसी चीज़ से दूसरों को होने वाले अधिक नुकसान के प्रति। और इसलिए, जब बाइबल को बहुत अधिक निर्णायक रूप से पढ़ा जाता है, और मुझे व्यक्तिगत रूप से ऐसा लगता है कि यह कुछ ऐसा है जो मुसलमानों, उनमें से कई जो अपने विश्वास को गहराई से मानते हैं, व्यक्तिगत रूप से, आप अक्सर वहाँ एक छोटी सी अभिव्यक्ति सुनते हैं, इंशाअल्लाह, अगर अल्लाह चाहेगा। मेरे पास इस कक्षा में कई साल पहले एक छात्र था; वह 14 साल की उम्र में गॉर्डन आया था, और वह इराक और ईरान के बीच युद्ध में टैंकों के सामने बंधा हुआ था।

और भले ही वह वहाँ था और उसे तुरंत नष्ट किया जा सकता था, उसे सिखाया गया था कि आप अपने भाग्य को टाल नहीं सकते, के सेरा सेरा, जो होगा, वह होगा। और अगर आपको वह गोला या वह गोली खाने के लिए किस्मत में लिखा है, तो आप सीधे स्वर्ग जाते हैं, और ऐसा ही हो। खैर, मुझे लगता है कि हम सभी इतिहास पर ईश्वर के नियंत्रण को स्वीकार करते हैं और पहचानते हैं।

वह नहीं चाहता कि हम जोखिम भरे या लापरवाह काम करें। वह चाहता है कि हम जीवन को महत्व दें। मेरा एक यहूदी रब्बी मित्र है जो मुझे बताता है कि यीशु सबसे पहले उस सिद्धांत को मानने वाले थे जो शायद सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत है जिसके अनुसार यहूदी बाइबल के समय से लेकर आज तक जीते आए हैं।

पिकुच नेफेश का सिद्धांत है। अगर आप मेरे अगले सत्र में हेशेल सेमिनार को देखें, तो उसमें एक खंड है जो अब्राहम जोशुआ हेशेल ने जीवन बचाने पर अपने एक लेख में लिखा है-- पिकुच नेफेश।

दूसरे शब्दों में, जीवन की रक्षा किसी भी अन्य आज्ञा से अधिक महत्वपूर्ण है। और यदि आपके पास दो नैतिक निरपेक्षताएँ हैं, यदि आप चाहें, तो आपस में टकराती हैं, तो आप किसे चुनेंगे? यह वह है, जो उम्मीद है, जीवन को बचाता है या संरक्षित करता है। यदि यह सब्त के दिन का उल्लंघन है या अनाज तोड़ना है, तो आप क्या करने जा रहे हैं? आप अनाज तोड़ेंगे ताकि आप जीवित रह सकें बजाय इसके कि आप सब्त के दिन के नियम के बारे में चिंता करें, जिसका आप उल्लंघन करेंगे।

यहां तक कि दाऊद के आदमियों ने भी जब वे भूखे थे, तो उपस्थिति की रोटी पर हमला किया, जिसका उल्लेख नए नियम में किया गया है। वे पवित्रतम स्थान में गए, जो कि पवित्रतम स्थान के ठीक बाहर था, और रोटी को पकड़कर उन्हें पोषण दिया। यीशु आते हैं और यदि दो परस्पर विरोधी निरपेक्षताओं का उल्लंघन होता है तो वे सब्त के दिन चंगा करेंगे।

यही कारण है कि ऐतिहासिक रूप से बहुत से यहूदी लोग जीवन बचाने के लिए लोगों की मदद करने वाले व्यवसायों में चले गए हैं। चिकित्सा, दंत चिकित्सा, विज्ञान, मानव प्रगति के लिए चीजें। जीवन बचाने के इस विचार से प्रेरित।

योम किप्पुर पर यरुशलम में केवल वाहनों को ही अनुमति दी गई। मैं यरुशलम में योम किप्पुर के दौरान शब्बत के दौरान था, जब योम किप्पुर और शब्बत एक साथ पड़े थे। सड़क पर केवल एम्बुलेंस को ही अनुमति दी गई थी, ताकि लोगों की जान बचाई जा सके।

मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि कभी-कभी कोई व्यक्ति पवित्रशास्त्र में लिखी किसी बात को पूरा करने के लिए बहुत इच्छुक हो सकता है, और यह परमेश्वर की इच्छा है, फिर भी यदि आप जीवन को हटा देते हैं, जीवन को जड़ से उखाड़ देते हैं, और इस प्रक्रिया में जीवन को नष्ट कर देते हैं, तो यह बहुत ही भयावह बात हो सकती है। इसलिए, युगांतशास्त्र न्याय को रद्द नहीं करता है। परमेश्वर चाहता है कि हम हमेशा जीवन को बचाने के बारे में चिंतित रहें और इस आधार पर जीवन के विनाश को उचित न ठहराएँ कि परमेश्वर ने ऐसा चाहा है।

एक और सिद्धांत, कुछ भविष्यवाणियों में कई क्रमिक पूर्ति के लिए देखें। मैं इसका उल्लेख इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि जब आप पवित्रशास्त्र को देखते हैं, खासकर यदि आप केवल नए नियम से शुरू करते हैं, तो आप यशायाह 7:14 को एक बेहतरीन उदाहरण के रूप में ले सकते हैं। अधिकांश ईसाई जो धार्मिक रूप से रूढ़िवादी समुदाय से हैं, वे तर्क देंगे, हाँ, कुंवारी जन्म एक अच्छी बात है।

और बेशक, नया नियम उस खास बिंदु पर स्पष्ट है। यह यशायाह 7:14 का हवाला देता है: देखो, एक जवान औरत या कुंवारी गर्भवती होगी और वह एक बेटे को जन्म देगी, और उसका नाम इममानुएल रखा जाएगा। खैर, जाहिर है, यशायाह 7:14 में वह भविष्यवाणी शुरू में उस बच्चे द्वारा समझी जानी थी जो यशायाह के अपने दिनों में पैदा होगा।

हम इस पद का अध्ययन सत्र के अंत से पहले करेंगे। यशायाह के मन में शायद महेर-शालल-हाश-बज़ है, जिसका उल्लेख अगले अध्याय में किया गया है और वह यशायाह का अपना पुत्र है। यहाँ तक कि इममानुएल शब्द का प्रयोग अगले अध्याय, अध्याय 8 में दो बार किया गया है। लेकिन वह स्थानीय या तात्कालिक संदर्भ था कि ईश्वर क्षितिज पर अश्शूर के रथ के बावजूद दाऊद वंश को संरक्षित करने में मौजूद साबित होगा।

यशायाह के दिनों में इस बच्चे के जन्म का उस तरह का भविष्यसूचक महत्व होगा, जिसका अर्थ है कि परमेश्वर हमारे साथ है। लेकिन हमारे साथ परमेश्वर की अंतिम अभिव्यक्ति अभी सैकड़ों साल बाद एक समय की प्रतीक्षा करेगी, जब कोई इस धरती पर चलेगा, और अवतार हमारे साथ परमेश्वर के होने की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति होगी। जाहिर है, यशायाह के दिनों में बच्चे का जन्म नए नियम के अर्थ में कुंवारी का जन्म नहीं था।

मरियम के गर्भ में पल रहा बच्चा अलौकिक था। मरियम और यूसुफ के बीच कोई यौन संबंध नहीं था। और इसका मतलब यह है कि यीशु के जन्म के बाद भी मरियम कुंवारी थी।

कोई शुक्राणु या अंडाणु नहीं था। वे एक साथ आए। यशायाह के अपने दिनों में, यह युवती जो बच्चे को जन्म देगी, वह स्पष्ट रूप से शब्द के सामान्य अर्थ में होगी।

इसलिए अल्मा किसी भी तरह से जा सकता है। और यशायाह के अपने दिनों में इस्तेमाल किया गया और उस दूसरे तरीके से भी इस्तेमाल किया गया जहाँ एक शुक्राणु और एक अंडा एक साथ आते हैं जब एक युवा महिला गर्भधारण करती है और एक बच्चे को जन्म देती है जो उस नाम को धारण करेगा। इसलिए, हमारे पास कुछ भविष्यवाणियों में एकाधिक पूर्ति है।

ऐसा नहीं है कि यशायाह 7:14 समय के साथ आगे बढ़ता है और अचानक यीशु में भविष्यवाणी पूरी हो जाती है। इसका एक स्थानीय अर्थ और एक स्थानीय संदर्भ था। अन्य भविष्यवाणियाँ भी हैं।

बाइबल में एकमात्र स्थान, पुराना नियम है, जहाँ यह एक नई वाचा के बारे में भविष्यवाणी करता है। हम नए नियम को एक नई वाचा के रूप में संदर्भित करते हैं। लेकिन यशायाह 31:31-34 कहता है कि वह दिन आ रहा है जब मैं इस्राएल के घराने और यहूदा के घराने के साथ एक नई वाचा बाँधूँगा।

अब, यिर्मयाह के समय में, तात्कालिक संदर्भ स्पष्ट रूप से उसके अपने देशवासियों के लिए है। इस्राएल और यहूदा। लेकिन परमेश्वर इस्राएल के घराने के साथ एक नई वाचा बाँधने जा रहा है।

वह उनके मन में व्यवस्था डालेगा और उसे हृदय पर लिखेगा और वे उसके लोग होंगे। वे सब उसे जानेंगे। पाप की स्थायी क्षमा होगी।

और फिर उसके ठीक बाद वह फिर से देह में इस्राएल के साथ एक शाश्वत संबंध के लिए खुद को प्रतिबद्ध करता है। यह वही है जो प्रभु ने कहा: वह जो दिन में चमकने के लिए सूर्य को और रात में चंद्रमा और सितारों को नियुक्त करता है, सर्वशक्तिमान प्रभु उसका नाम है, केवल अगर ये सूर्य प्रतिदिन चमकते हैं, रात में चंद्रमा और सितारे और समुद्र की लहरें गरजती हैं, अगर प्राकृतिक दुनिया में ये चीजें मेरी दृष्टि से गायब हो जाती हैं, तो मेरे वंशज गायब हो जाएंगे। इसलिए, दूसरे शब्दों में, उनके लोग, जैसा कि पद 36 में कहा गया है, इस्राएल के वंशज, हमेशा बने रहेंगे या अस्तित्व में रहेंगे या मेरे सामने एक राष्ट्र के रूप में अस्तित्व में रहना कभी बंद नहीं करेंगे, पद 36

इस संदर्भ में, फिर, केवल यह कहने से अधिक लगता है, ठीक है, यह नए नियम में सबसे लंबा उद्धरण है, और यह है। और क्या यह यीशु के पहले आगमन में पूरा हुआ? निश्चित रूप से, इसका अर्थ पूर्ति के संदर्भ में आरंभ होता है जब आप इब्रानियों अध्याय 8 और मसीह के खून में इस सबसे लंबे समय तक चलने वाले वाचा को देखते हैं।

लेकिन, वास्तव में, इसकी पूर्णता के संदर्भ में, यिर्मयाह के लोगों के भौतिक वंश के संदर्भ में भी इसका महत्व हो सकता है। मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि इस्राएल का चुनाव सिनाई में एक सामूहिक चुनाव था। इसमें एक लोग शामिल थे।

और इसलिए, पवित्रशास्त्र इन लोगों के बारे में भी बात करता है जिनकी संख्या हम अपने विश्वास के कारण आध्यात्मिक रूप से बढ़ाते हैं, कि परमेश्वर अपने चुनाव प्रेम के कार्य को पूर्णता के समय तक जारी रखेगा जब तक कि पूरे लोगों के बीच वह कानून आंतरिक रूप से लिखा न जाए।

जैसा कि पौलुस ने संभवतः रोमियों 11 में संकेत दिया है। उद्धारकर्ता सिथ्योन से बाहर आता है, याकूब से अधर्म को दूर करता है।

और इसलिए, उस शारीरिक बीज का कुछ प्रकार का संचयी समापन है जिसका एक हिस्सा पौलुस प्रेरित था। और वह बीज, कम से कम अस्थायी रूप से, पौलुस की समझ के अनुसार नहीं समझा था। लेकिन फिर भी, पुराने नियम से जो संकेत मिलता है, और यहाँ तक कि पौलुस भी पुष्टि करता है, वह और भी अधिक आना बाकी है।

तो, इनमें से कुछ बातों में क्रमिक पूर्ति हो सकती है। तो, यशायाह 31 आप और मुझे पर अब्राहम के परिवार के विस्तारित संस्करण के रूप में लागू होता है। इस्राएल का विस्तारित संस्करण।

क्योंकि हम वे लोग हैं जिनके दिल और दिमाग में आंतरिक रूप से कानून लिखा गया है। और हमने क्रूस पर प्रायश्चित के माध्यम से परमेश्वर की क्षमा का अनुभव किया है। क्या यह इस भाषा का अर्थ समाप्त कर देता है? जब संदर्भ में पढ़ा जाता है, और यह वह जगह है जहाँ विधिपूर्वक फिर से मैं वापस आता हूँ, हम पुराने नियम से शुरू क्यों करते हैं, फिर नए नियम पर जाते हैं? मेरे कई ईसाई मित्र जो नए नियम के विद्वान हैं, नए नियम से शुरू करते हैं और अक्सर यह धारणा देते हैं कि पुराना नियम मौजूद नहीं है या अब मायने नहीं रखता या मायने नहीं रखता।

यह वही है जो अंतिम नए नियम के वचन में चीजों के बारे में है। और मुझे लगता है कि जब आप यिर्मयाह 31 के अंश को देखते हैं, या यहाँ तक कि योएल 2 के अंश को भी देखते हैं, तो यह भी संभवतः किसी प्रकार की कई पूर्तियों का संकेत देता है। जब पतरस ने प्रेरितों के काम 2 में अपना उपदेश दिया, तब परमेश्वर ने पवित्र आत्मा को उन्डेलना शुरू किया। लेकिन जोएल 2 का अंश आप पढ़ रहे हैं, शुक्रवार के लिए तैयार होने के लिए, जब प्रभु का दिन आता है, और वह अपनी आत्मा को उन्डेलता है, वह उस अंश को यह कहकर समाप्त करता है कि जो कोई भी प्रभु का नाम पुकारेगा वह बच जाएगा।

वह इसे सिथ्योन पर्वत और यरूशलेम से जोड़ता है, जहाँ एक महान उद्धार होगा। फिर वह आगे कहता है कि ये अध्याय और छंद बाइबिल काल के सैकड़ों साल बाद तक वहाँ नहीं रखे गए थे। उन दिनों में, मैं यहूदा और यरूशलेम के भाग्य को बहाल करूँगा।

और यद्यपि लोग राष्ट्रों में बिखरे हुए हैं, और यद्यपि मेरी भूमि विभाजित है, वह उन आशीषों के बारे में बात करता है जो परमेश्वर के लोगों पर आने वाली हैं। जो लोग सिथ्योन और यरूशलेम में रहते हैं वे पवित्र हो जाते हैं, और फिर कभी विदेशी उस पर आक्रमण नहीं करेंगे। अब भाषा काव्यात्मक है, लेकिन यह निश्चित रूप से बोलती है, जैसा कि मेरे यहूदी मित्र मुझे याद दिलाते हैं जब वे अपनी बाइबल खोलते हैं, और यह आश्चर्यजनक है कि ईसाई यहूदियों को यह बताने देने से कितनी अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं कि उनकी बाइबल क्या कहती है।

हम अक्सर यहूदी बाइबिल को हाईजैक कर लेते हैं, उसे ले लेते हैं, उसकी पुनर्व्याख्या करते हैं और यहूदियों को बताते हैं कि इसका क्या अर्थ है। मैं कह रहा हूँ कि कभी-कभी यहूदी लोगों से यह पूछना शिक्षाप्रद हो सकता है कि वे अपने स्वयं के ग्रंथों को कैसे पढ़ते हैं, बजाय इसके कि हम उनकी बाइबिल को हाईजैक कर लें और फिर वापस आकर उन्हें बताएं कि उनके ग्रंथ का

क्या अर्थ नहीं है, और कभी-कभी उन्हें वंचित कर दें। जैसा कि पिछली सदी में लिखने वाले एक महान यहूदी विद्वान जोसेफ क्लॉसनर ने कहा था, ईसाई धर्म के साथ समस्या यह है कि इसने बाइबिल के सांसारिक, भौतिक और कभी-कभी राजनीतिक आयामों को भी हटा दिया है।

और इसीलिए गॉर्डन में हम चाहते हैं कि छात्र यरूशलेम जाएँ, वहाँ अध्ययन करें, भौतिक भूगोल से जुड़ें। हम अपने भजनों में गा सकते हैं। हम सिथ्योन की ओर बढ़ रहे हैं, जो ऊपर स्थित सुंदर शहर है।

लेकिन हम निश्चित रूप से इस दुनिया के यरूशलेम से बहुत कुछ सीख सकते हैं, एकमात्र यरूशलेम जिसे यहूदी समुदाय ने कभी जाना है और एकमात्र ठोस यरूशलेम जिसके बारे में बाइबल में बताया गया है जिसे लोग कम से कम इस बिंदु तक जानते हैं। इसलिए यह संबंध बहुत महत्वपूर्ण है। हम सभी को यरूशलेम में खो जाना चाहिए। मेरे अच्छे सहयोगी, डॉ. हिल्डेब्रांड के लिए एक प्लग, जो इस पर आमीन कहेंगे।

ठीक है, तो इनमें से कुछ की कई पूर्तियाँ हैं। फिर, एक और संक्षिप्त सिद्धांत, पत्राचार या समतुल्यता का सिद्धांत, कुछ ग्रंथों पर लागू हो सकता है।

एक क्षेत्र जहाँ मैं इसे यशायाह से जल्दी से स्पष्ट कर सकता हूँ, वह अध्याय 2 होगा। जब ईश्वर, काव्यात्मक भाषा में, पैगंबर को यह बताना चाहता है कि शांति क्या है, मसीहाई कार्यक्रम के अंतिम कार्यान्वयन में, वह यशायाह 2.4 में कहता है, वे अपनी तलवारें हल के फाल में और अपने भालों को काँटों में पीटेंगे। एक राष्ट्र अब किसी राष्ट्र के विरुद्ध तलवार नहीं उठाएगा या युद्ध के लिए प्रशिक्षण नहीं लेगा। तलवारें और भाले, मुझे लगता है, शांति की तरह हैं और, वास्तव में, युद्ध के ज्ञान की हानि, जिसके बारे में यह पाठ बोलता है, ऐसा कुछ नहीं है जिसे इस दुनिया को अभी तक महसूस करना है।

तो, समतुल्यता के संदर्भ में, क्या यह टैंक होगा, क्या यह मिसाइल होगा, क्या यह युद्ध के औजारों, भालों और तलवारों को हटाने के मामले में लड़ाकू जेट होगा? और यहाँ तस्वीर इन्हें कृषि औजारों, शांति के औजारों में बदलने की है। हल और छंटाई के कांटे, युद्धरत लोग नहीं, बल्कि शांति में रहने वाले लोग।

क्या यह थ्रेसर और कंबाइन और जॉन डीयर और फार्महॉल होगा। इन दूसरे शब्दों का क्या मतलब है? समतुल्यता का विचार, या शायद हम इस तरह से सोचना चाहते हैं कि यशायाह ने इस धरती पर शांति के बारे में जो दृष्टिकोण बताया है, उसके बारे में। जब आपके पास उस दिन योम हा'हू द्वारा वह अभिव्यक्ति होती है, जो भविष्यवक्ताओं में कई बार दोहराई जाती है।

यशायाह 19 में, आपके पास उनमें से एक है। उस दिन, मिस्र से अश्शूर तक एक राजमार्ग होगा। अब, फिर से, यह इस धरती पर परमेश्वर के शालोम और परमेश्वर के मसीहाई शासन का अंतिम कार्यान्वयन है।

आधुनिक दुनिया में, क्या आप असीरिया के बजाय इराक कहेंगे? यह कहता है, ठीक है, लिविंग बाइबल इसके साथ यही करती है, उस विचार को आगे बढ़ाती है और उसे आधुनिक बनाती है।

हिब्रू पाठ में असीरियन कहा गया है। और जैसे ही हम योना के बारे में बात करेंगे, हम उस असीरियन संदर्भ में आ जाएंगे।

लेकिन यह कहता है कि अशशूर मिस्र जाएंगे और मिस्री अशशूर जाएंगे। मिस्री और अशशूर एक साथ पूजा करेंगे, और उस दिन, मिस्र और अशशूर के साथ इस्राएल तीसरा होगा। पृथ्वी पर एक आशीर्वाद।

इसलिए, इराकी, मिस्री और इज़राइल सभी एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और धरती पर आशीर्वाद की तरह हैं। और यशायाह 19 की आखिरी आयत कहती है, सर्वशक्तिमान प्रभु उन्हें आशीर्वाद देंगे, इज़राइल के सदियों पुराने दुश्मन, असीरियन, मिस्रियों को आशीर्वाद देंगे, जिन पर आज मुसलमानों का वर्चस्व है और कुछ संघर्षरत कॉप्टिक ईसाई बचे हैं। प्रभु उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहेंगे, धन्य हो मिस्र, मेरे लोग।

असीरिया, मेरी कृति। और इस्राएल, मेरी विरासत। यह शांति के लिए एक सार्वभौमिक दृष्टिकोण है।

तीन ईश्वर नहीं, अल्लाह, अडोनाई और क्राइस्ट। यहाँ इसका उल्लेख नहीं किया गया है। लेकिन ऐसा लगता है कि वे सभी एक साथ पूजा कर रहे हैं, यह एक सच्चे ईश्वर की पूजा करके लाई गई शांति और एकता का वर्णन है।

राष्ट्रों के नाम बदलते हैं। 1935 में, फारस ईरान बन गया। और बाइबल में आप जो नाम पढ़ते हैं, खासकर धर्मग्रंथों में, वे इसराइल के भविष्यद्वक्ता हैं जो दूरबीन से समय के राजमार्गों पर लंबी नज़र डालते हैं।

इसीलिए यहूदी लोगों की शब्दावली में एक शब्द कभी नहीं पाया जाता। और वह शब्द है हतोत्साह। यह शब्द अवसाद को दर्शाता है।

अवसाद। ऐसा नहीं होगा। यहूदी धर्म हमेशा से ही आशा का धर्म रहा है क्योंकि इसने आपको, मुझे और बाकी दुनिया को स्वर्ण युग की अवधारणा से परिचित कराया है।

वह इतिहास इस धरती पर शांति, न्याय, धार्मिकता के चरमोत्कर्ष की ओर बढ़ रहा है। और इसलिए यहाँ भविष्यवक्ताओं की भाषा को अद्यतन किया जाना चाहिए। राष्ट्र, लेबल के अनुसार, आते हैं और चले जाते हैं।

लेकिन बाइबिल काल में भी प्रदेशों के कई-कई अलग-अलग नाम हो सकते हैं। गलील सागर के बारे में ही सोचिए। यह तिबेरियास सागर, गेनेसरेट सागर या गलील हो सकता है। लेकिन हिब्रू बाइबिल में इनमें से कोई भी शब्द नहीं आता।

यह किन्नरेट है। वीणा के आकार का समुद्र। इसके कई अलग-अलग नाम हो सकते हैं।

अगला सिद्धांत। भविष्यवाणी, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, मूल श्रोताओं के लिए एक संदेश है। मैं फिर से यह दोहराना चाहता हूँ कि जब हम इस्राएल के भविष्यवक्ताओं का अध्ययन करते हैं, तो संदेश में मुख्य रूप से उस समय के लोगों के लिए कुछ कहना होता है।

और फिर, उस लोकप्रिय धारणा को खारिज करते हुए कि भविष्यवाणी हमेशा भविष्य से जुड़ी होती है। वर्तमान पीढ़ी को सुधार की जरूरत है, फटकार की जरूरत है। भविष्यवक्ता नैतिक धार्मिकता के अग्रदूत थे।

लेकिन उन्हें आने वाले बेहतर समय के लिए आशा की भी आवश्यकता थी। और इसलिए वह एक शब्द, निराशा, यहूदियों की शब्दावली का हिस्सा नहीं है। यह बस नहीं किया जा सकता है।

यही कारण है कि यहूदी लोग शायद इतिहास में सबसे ज़्यादा लचीले लोग रहे हैं। कभी-कभी, इसे बस एक मृत सभ्यता माना जाता है। लेकिन इज़राइल अभी भी जीवित है।

आज हम मिस्रवासियों का अध्ययन कहाँ करते हैं? बोस्टन में हंटिंगटन एवेन्यू में। या ब्रिटिश संग्रहालय में। या न्यूयॉर्क शहर में, जहाँ शास्त्रीय मिस्र की सभ्यता पाई जाती है।

हम कनानी लोगों का अध्ययन कहाँ करते हैं? हम कनानी संस्कृति से लिए गए कुछ अद्भुत टुकड़ों के लिए रोड आइलैंड स्कूल ऑफ़ डिज़ाइन जाते हैं। हम इज़राइल संग्रहालय जाते हैं। हम यरूशलेम में इज़राइल संग्रहालय के बाहर बाइबल लांस संग्रहालय जाते हैं।

ये प्राचीन सभ्यताएँ हैं। लेकिन इज़राइल अभी भी जीवित है। और यही एक कारण है कि ईसाइयों को इज़राइल की ज़रूरत है।

हमें पुरातत्वविदों, इतिहासकारों, भाषाविदों, बाइबिल के विद्वानों के काम की आवश्यकता है। आज दुनिया में इंजीलवादियों और यहूदियों के बीच होने वाले कुछ बेहतरीन सहयोगात्मक काम यरूशलेम में हो रहे हैं, जहाँ वे एक साथ मिलकर पवित्रशास्त्र का अध्ययन कर रहे हैं। एक और, बस व्याख्यात्मक रूप से चेतावनी देते हुए, आप और मैं पश्चिमी सोच से बहुत अधिक प्रभावित हैं, जो कहीं अधिक तार्किक, कहीं अधिक सामंजस्यपूर्ण, एक आधार से निष्कर्ष तक कहीं अधिक तर्क करने वाला, और इस मामले में सावधानीपूर्वक काम किए गए व्यवस्थित दृष्टिकोण को अपनाना चाहता है कि इज़राइल का भविष्य क्या है? यह बहुत जटिल है।

मैं ऐसे किसी व्यक्ति से सावधान रहना चाहूँगा जो भविष्य के बारे में बहुत ज़्यादा जानता हो। बाइबल कई मोर्चों पर चीज़ों को स्पष्ट करती है, इसलिए हमें सावधान रहना चाहिए।

हम अंत समय को विशेष रूप से समझने के लिए कोई विस्तृत प्रणाली बनाने की कोशिश नहीं कर रहे हैं। सापेक्षता को पूर्ण मानना बहुत आसान है। अगला बिंदु जो मैं कहना चाहता हूँ वह बहुत अधिक महत्वपूर्ण है।

नए नियम में, खास तौर पर मैथ्यू के सुसमाचार में, लेकिन यह आपको अन्यत्र भी मिलता है, हम शब्द पूरा करना पाते हैं। इसका मतलब है पूरा करना। और आमतौर पर, इसका मतलब एक-से-एक संबंध नहीं होता है।

एक भविष्यवक्ता ने आने वाली किसी बात के बारे में कहा था, और नए नियम में, आपको उस भविष्यवाणी की पूर्ति मिलती है। पूर्ति अक्सर किसी विशेष विचार को पूर्ण करने के अर्थ में होती है। इसे ही विद्वान सेंसस कहते हैं पवित्रशास्त्र का पूर्ण पाठ .

पवित्रशास्त्र का पूर्णतम या गहनतम अर्थ। मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ जिससे आप मत्ती 2:15 से परिचित हैं, वह उठा और उसने रात के समय बालक और उसकी माता को लिया और मिस्र के लिए रवाना हो गया।

हम जानते हैं कि यीशु केवल एक बार मिस्र में थे, कम से कम बाइबिल के पाठ के अनुसार। वह एक छोटा बच्चा था और लगभग चल सकता था। और वे मिस्र भाग गए और जब तक मैं तुम्हें नहीं बताता, तब तक वहीं रहे, क्योंकि हेरोदेस उस बच्चे को मारने के लिए उसे ढूँढ़ने जा रहा है।

इसलिए, वह रात में ही उठकर बच्चे और उसकी माँ को लेकर मिस्र के लिए निकल पड़ा। वे रूट 95 से नीचे उतरे और वाया मैरिस से चले, जैसा कि बाद में रोमनों ने इसे कहा। संभवतः वे डेल्टा क्षेत्र में कहीं नीचे उतरे।

वह हेरोदेस की मृत्यु तक वहीं रहा। अब हेरोदेस महान की तिथियाँ, 37 ईसा पूर्व से 4 ईसा पूर्व तक वह हेरोदेस की मृत्यु तक वहीं रहा। बेशक, आप मसीह के जन्म की तिथियों के संदर्भ में कैलेंडर की समस्या जानते हैं।

लेकिन हेरोदेस मर जाता है, और फिर श्लोक 15 में कहा गया है, वह हेरोदेस की मृत्यु तक वहीं रहा और इस प्रकार वह पूरा हुआ जो प्रभु ने भविष्यवक्ता के माध्यम से कहा था, मिस्र से मैंने अपने बेटे को बुलाया। इसलिए, वह वही उद्धृत करता है जो आप शुक्रवार की परीक्षा के लिए पढ़ रहे थे। मिस्र से मैंने अपने बेटे को बुलाया है।

होशे 11.1 यह उसी को पूरा करना है। यह उस अर्थ में उसे पूरा करता है अब परमेश्वर के दो पुत्र हैं।

दरअसल, दो से ज़्यादा। हम भगवान के बेटे हैं। हम टेक्निया हैं हम परमेश्वर की सन्तान हैं।

परमेश्वर के पुत्र। परमेश्वर का मूल पुत्र इस्राएल था। मिस्र से पलायन के समय, मैंने अपने पुत्र को बुलाया।

उसे मिस्र से बाहर लाया गया। इस्राएल यहोवा का ज्येष्ठ पुत्र था। लेकिन उसका एक दूसरा पुत्र भी होगा, और उस दूसरे पुत्र का महत्व उसके पहले पुत्र से कहीं अधिक बड़ा और कहीं अधिक प्रभावशाली होगा।

इसलिए, मिस्र से बाहर आने के उस अर्थ को पूरा करने के लिए मैंने अपने बेटे को बुलाया है, मसीह घटना में, उसमें सब कुछ समाहित है, जो आदर्श इस्राएली है, अगर आप चाहें तो। वह वह है जो मिस्र से बाहर आने का जो भी अर्थ है, उसका अंतिम रूप से प्रतीक है। ईश्वर का अद्वितीय पुत्र।

उसका बेटा जिसे उसने दुनिया में भेजा। और इसलिए, अगर आपको लगता है कि आप जानते हैं कि मिस्र से बुलाए गए बेटे का क्या मतलब है, तो आपने तब तक कुछ भी नहीं देखा है जब तक कि आपने परमेश्वर के बेटे को नहीं देखा है। यीशु से जुड़ी कोई भी बात मामले की प्रकृति में महान है।

इब्रानियों की किताब पढ़िए। हमारे पास एक बेहतर महायाजक है। हमारे पास एक नया मूसा है।

सब कुछ बेहतर है क्योंकि अब प्रकार और छायाएँ खत्म हो गई हैं और असली चीज़ आ गई है। इसलिए यह बेहतर है। तो, इसका पूरा अर्थ क्या है? भाव है plenior .

इसका जो भी मतलब हो, यह मिस्र से बाहर आने का अर्थ है। और यीशु में, अर्थ पूर्ण है। इसलिए, यीशु के आने में अक्सर इस पूर्ण अर्थ की तलाश करें, जहाँ यह विचार को व्यापक बनाता है और इसे अर्थ से भर देता है।

पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं को पढ़ते समय कुछ आश्चर्यजनक क्षणों की अपेक्षा करें। कभी-कभी नए नियम के समय में पुराने नियम के ग्रंथों की अप्रत्याशित पूर्ति होती है। उनमें से कुछ परमेश्वर के राज्य से संबंधित हैं।

यीशु यहूदियों का राजा हो सकता है, लेकिन उस अर्थ में नहीं जिसकी लोगों को उम्मीद थी। उनका कोई शक्ति प्रदर्शन नहीं था। लेकिन फिर भी, उनके जीवन में परमेश्वर का शासन देखा जा सकता है।

अगर मैं दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, अगर मैं चमत्कार करता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ गया है। परमेश्वर की वह गतिशील शक्ति, शासन और शासन। परमेश्वर का राज्य क्या है? जहाँ भी परमेश्वर कार्यभार संभालता है।

परमेश्वर का राज्य इस कमरे में है क्योंकि कोई हमारे दिलों में राज कर रहा है और शासन कर रहा है जिसकी इच्छा का हम पालन करना चाहते हैं। किसी और का राजा। अब, वह आज हमारे जीवन में मसीह और पवित्र आत्मा के माध्यम से उस शासन की मध्यस्थता करता है।

कोई भी व्यक्ति उसके मुकुट के साथ सिंहासन पर नहीं बैठा है। लेकिन हम परमेश्वर के शासन और शासन को जानते हैं। शास्त्रों के अनुसार यह आध्यात्मिक शासन अंततः इस धरती पर एक भौतिक, ठोस शासन और शासन की ओर ले जाएगा, जहाँ धार्मिकता, न्याय और शांति का एहसास होगा।

जहाँ शत्रुओं का वास्तव में नाश किया जाएगा, और उसकी प्रभुता और उसके शासन और उसकी विजय का अनुभव किया जाएगा। यह पुराने नियम की दिव्य राजत्व की अवधारणा की छवि है।

यरूशलेम में राजा थे, और मसीहा को राजा बनना था। लेकिन अंततः, परमेश्वर ही राजा था। भौतिक रूप में जो समझा गया था, उसका एक स्वर्गीय प्रतिरूप था।

एक स्वर्गीय मंदिर था, लेकिन एक सांसारिक मंदिर था। मसीहा को आश्चर्य हुआ कि वह मरने के लिए एक पीड़ित सेवक के रूप में आया था। ऐसे बहुत कम लोग थे जो उस चीज़ को एक साथ जोड़ सकते थे।

वह एक राजनीतिक व्यक्ति के रूप में नहीं आए थे। और इसलिए, अबेद-याहवे, प्रभु के सेवक की अवधारणा को, यशायाह 53 से, पुराने नियम में कुछ अन्य पहलुओं के साथ एक साथ लाना, हमेशा उतना स्पष्ट नहीं होता। ठीक है।

क्या इस खंड में मैंने जो कुछ भी कहा है, उस पर आपके कोई प्रश्न हैं? मुझे योना की पुस्तक पर कुछ अंतिम टिप्पणियाँ करने दें, जिस पर मैं अगले सप्ताह विशेष रूप से चर्चा करूँगा। योना की छोटी पुस्तक को बहुत से लोग याद करते हैं, दुख की बात है, क्योंकि वे सभी बड़ी मछलियों पर ठोकर खाते हैं। यह पुस्तक एक बड़ी मछली के बारे में नहीं बल्कि एक बड़े ईश्वर के बारे में एक कहानी है।

और धर्मशास्त्र की बहुत सी समझ या धर्मशास्त्र का अध्ययन इस बारे में है कि इस्राएल का परमेश्वर कौन है और दुनिया में उसकी चिंताएँ क्या हैं। हम कुछ बातें सीखते हैं। इस पुस्तक में बहुत-बहुत महत्वपूर्ण बातें हैं।

और एक बात जो हम सीखते हैं वह यह है कि पुराने नियम के समय में यहोवा के प्रति अंतरराष्ट्रीय प्रेम चल रहा था। इस्राएल में बहुत से लोग थे जो परमेश्वर के प्रेम के बारे में बहुत ही संकीर्ण समझ रखते थे। अगर योना की किताब न होती, तो आप और मैं आज यहाँ नहीं होते।

परमेश्वर के पास अपनी भेड़ों के अलावा भी भेड़ें हैं। और एक बुतपरस्त, गैर-इज़रायली समुदाय के पास जाना है जो प्राचीन निकट पूर्व में गश्त करने वाली महाशक्ति थी। परमेश्वर के पास उस भूमि में ऐसे लोग हैं जिन्हें उसके प्रेम और उसकी करुणा को जानने की आवश्यकता है।

कबूतर शब्द का मतलब वास्तव में योना है। इसके कई संस्करण हैं। योना का नाम होशे की किताब में पाया जाता है।

यह एक हिब्रू शब्द है। इज़राइल एक मूर्ख योना की तरह है। कबूतर।

आप इसे नए नियम में देख सकते हैं। यह एक ग्रीककृत रूप है। जोनास, जोनास।

वही शब्द। परंपरागत रूप से, इस पुस्तक को योना के नाम से जाना जाता है। उसे 1.1 में अमितै का पुत्र कहा गया है। और आखिरी बात जो मैं कहना चाहता हूँ वह यह है कि बाइबल में योना के शहर की पहचान बताई गई है।

और यह गलील में स्थित एक शहर है जिसका नाम गथ-हेफर है। और आप देख सकते हैं कि यह उसी क्षेत्र में स्थित था जहाँ यीशु बड़े हुए थे। यीशु बड़े ज़ेबुलुन में बड़े हुए।

जबूलून। याकूब के बेटों पर। जबूलून के इलाके में।

जबूलून नासरत से लगभग पाँच मील दूर है। गथ-हेफर। तो, यह भविष्यवक्ता गलील से है।

सैकड़ों साल बाद, गलील से एक और नबी आएगा। तो, यह वह क्षेत्र है जहाँ हम उत्तरी राज्य के नबियों के बारे में बात करेंगे। योना उत्तरी राज्य से पहला विदेशी मिशनरी होगा।

फिर हम होशे के बारे में बात करेंगे जो उत्तरी राज्य से होगा और उत्तरी राज्य के लोगों से बात करेगा। और फिर एक और भविष्यवक्ता जिसने उत्तरी राज्य में सेवा की। वह आमोस था।

वह दक्षिणी राज्य के टेकोआ से आया था और उसे उत्तरी राज्य में अपना संदेश देना था। ठीक है, आज के लिए बस इतना ही। हम आपसे शुक्रवार को मिलेंगे।

यह डॉ. मार्व विल्सन द्वारा भविष्यवक्ताओं पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र संख्या 7, हेर्मेनेयुटिकल सिद्धांत, भाग 3 और योना का परिचय है।